कुतुबुद्दीन ऐबक

DR RAJEEV KUMAR
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF HISTORY
LANGAT SINGH COLLEGE MUZAFFARPUR
B.R.A. BIHAR UNIVERSITY MUZAFFARPUR

भूमिका

- कुतुबुद्दीन ऐबक गुलाम वंश का शासक था। वास्तव में वह मुहम्मद गौरी के तीन गुलामों (कुतुबुद्दीन ऐबक, ताजुद्दीन याल्दौज तथा नासिरुद्दीन कुबाचा) में से एक था।
- गौरी के मृत्यु के बाद ऐबक 1206 में दिल्ली का शासक बना।
- ऐबक ने अपना शासन लाहौर से हीं चलाया। लेकिन ऐबक को अपने शासन के दौरान याल्दौज और कुबाचा से संघर्ष करना पडा

दिल्ली सल्तनत 1206-1290

ऐबक की चुनौतियाँ

- गोरी के अन्य गुलाम ऐबक की सत्ता को चुनौती दे रहे थे।
- समकालीन भारतीय शासकों (चंदेल, गहडवाल, प्रतिहार) के समक्ष ऐबक को खुद को साबित करना था।
- पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत की सुरक्षा भारत के लिए सदैव चिंता कारण रहा। ऐबक को भी इस परिस्थिति से गुजरना पडा।

ऐबक के संघर्ष

- सर्वप्रथम ऐबक ने याल्दौज के विरुद्ध अभियान किया। गजनी की स्वतंत्रता ऐबक के लिए खतरे की तरह था। 1208 में अभियान कर उसे परास्त किया परंतु जनता विरोध की वजह से उसे वापस आना पडा।

- बाद में उसने गजनी से संबंध तोड लिया। वह ना तो गजनी पर अधिकार कर सका और ना ही याल्दौज को भारत आने दिया।

ऐबक के संघर्ष

- बंगाल में ऐबक को खल्जी सरदारों से संघर्ष करना पडा। अंततः ऐबक इसमें सफल रहा।

- सिंध एवम मालवा पर कुबाचा ने अधिकार कर लिया था। इस समस्या के समाधान के लिए ऐबक ने अपनी बहन का विवाह कुबाचा से कर दिया। इस प्रकार कूटनीति का सहारा लेकर ऐबक ने अपने भारतीय क्षेत्र को कुबाचा से बचा लिया।

निर्माण के क्षेत्र में योगदान

- अजमेर में ढाई दिन का झोपडा का निर्माण ऐबक ने करवाया था।
- दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम का निर्माण भी ऐबक ने ही करवाया था।
- दिल्ली में हीं कुतुबमीनार की नींव ऐबक ने हीं रखा था। परंतु बीच में हीं उसकी मृत्यु हो गई। अतः इल्तुतमिश इसे पूरा करवाया।

निष्कर्ष

- कुतुबुद्दीन एक कुशल सेनानायक एवम प्रबंधक था। साथ हीं मुहम्मद गौरी का योग्य उत्तराधिकारी था।

- वह लाहौर को ही राजधानी बना कर शासन किया। परंतु दिल्ली को वह हर तरह से महफूज रखने में सफल रहा।

- यद्यपि उसे शासन करने का बहुत हीं कम समय मिला। मात्र 4 वर्ष 1206 से लेकर 1210 तक वह दिल्ली का शासक रहा। परंतु बावजूद इसके वह अपने शासन को एक स्वरुप देने सफल रहा।

उपलब्धियाँ

- वह बडे ही खुले दिल से दान करता था। इस वजह से उसे लाख बख्श कहा जाता था।
- अपने छोटे से कार्यकाल में उसने ना केवल अपने साम्राज्य को सुदृढ किया बल्कि उसे एक स्वरुप भी प्रदान किया।
- इस्लामिक परंपरा के अनुरुप इबादत स्थल का निर्माण भी करवाया।

- धन्यवाद

- घर पर रहें
- सुरक्षित रहें